भारत सरकार

परमाणु ऊर्जा विभाग

23.07.2014 को लोक सभा में

पूछा जाने वाला अतारांकित प्रश्न संख्या : 2043

कचरे का जैव-उर्वरकों में परिवर्तन

2043. श्री पी.सी. गद्दीगौदर:

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने जल-मल के शोधन और इसे विकिरण के प्रयोग द्वारा जैव-उर्वरक में परिवर्तन करने के लिए एक तकनीक विकसित कर ली है या विकसित किए जाने का विचार है; और

(ख) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और किन शहरों/राज्यों में यह तकनीक प्रयोग किए जाने की संभावना है?

उत्तर

राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधान मंत्री कार्यालय (डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

(क) तथा (ख) भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बीएआरसी), जोकि इस विभाग का एक संघटक यूनिट है, ने गामा विकिरण को उपयोग में लाकर मलजल आपंक स्वच्छन के लिए प्रौद्योगिकी विकसित की है। भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, वडोदरा नगर निगम और गुजरात सरकार द्वारा गुजरात में वडोदरा में आपंक स्वच्छन अनुसंधान किरणक (एसएचआरआई) नामक एक प्रदर्श संयंत्र संयुक्त रूप से स्थापित किया गया है और यह लगभग सोलह वर्षों से प्रचालनरत है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत, आर्द्र आपंक, जिसमें लगभग 4% ठोस पदार्थ और 96% जल होता है, को किरणन को काम में लाकर स्वच्छ किया जाता है। आर्द्र आपंक को शुष्कन संस्तरों पर रखा जाता है, जहां सूर्य की रोशनी में आर्द्र आपंक शुष्क होकर ठोस केक बन जाता है। इस स्वच्छीकृत ठोस केक को कृषि संबंधी पद्धतियों में उसी रूप में और उनके संबंध में तैयार किए गए सूत्रों के अनुसार उपयोग में लाया जाता है। यह पाया गया है कि ठोस केक को सीधे स्वच्छीकृत करना (80% ठोस+20% आर्द्र) अधिक सस्ता पड़ता है, और इसे बड़े नगरों और शहरों की आवश्यकता पूरी करने के लिए पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराया जा सकता है। इस प्रौद्योगिकी का उपयोग, शहरों और नगरों, जहां मलजल संसाधन संयंत्र (एसटीपी) मौजूद होता है, किया जा सकता है

****